International Journal of Jyotish Research: 2016; 1(1): 16-19

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2016; 1(1): 16-19
© 2016 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 05-05-2016
Accepted: 06-06-2016

प्रवीण कुमार बाजपेई
शोधच्छात्र, ज्योतिर्विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
प्रवीण कुमार बाजपेई
शोधच्छात्र, ज्योतिर्विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

वैदिक तथा वैदिकोत्तर काल में युगीयमान का तुलनात्मक अध्ययन

प्रवीण कुमार बाजपेई

प्रस्तावना

ज्योतिष वेद का एक अङ्ग है इसे वेद का निर्मल नेत्र "वेदस्य निर्मलं चक्षुः" कहा गया है| ज्योतिष ही नही अपितु समस्त वेदाङ्ग वेद से सम्बन्धित हैं यज्ञादि के निमित्त शुभ काल जानना आवश्यक था, अतएव ज्योतिष का प्रयोग वेदों में कालगणना तथा यज्ञ सम्पादन के निमित्त हुआ करता था | यथोक्तम् -

वेदाहि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता: कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः|
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ||[1]

काल के समस्त खण्ड अर्थात् युग, संवत्सरवर्ष, अयन ऋतु, मास क्षयमास, अधिकमास, तिथि, वार, दिनमान, रात्रिमान, मुहूर्त, सूक्ष्ममुहूर्त, तारा नक्षत्र, ग्रहण, सूर्यादि नवग्रह आदि का प्रयोग वैदिक साहित्य में पाया जाता है |

प्रणम्य शिरसा कालमभिवाद्य सरस्वतीम् |
कालज्ञानं प्रवक्ष्यामि लगधस्य महात्मन:||

कालज्ञान बोधक ज्योतिषशास्त्र का वर्तमान विकसित स्वरूप आचर्य लगध मुनि की देन है । महात्मा लगध ने 'वेदाङ्गज्योतिष' की रचना करके ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण की है। वह कालज्ञ एवं तपोनिष्ठ आचार्य थे ।

वैदिकज्योतिष में युगों का वर्णन अनेकों बार आया है किन्तु वैदिक युगों का मान आज के युगों के कालमान से बहुत भिन्न है समय के प्रवाह के साथ बाद के ऋषियों विद्वानों ने उन्हें और विस्तृत करके नई दिशा प्रदान की है | ज्योतिष की उत्पत्ति कालगणना के लिए हुई । अतः काल को मापने के लिए पैमाने निश्चित किये गये प्रश्न उठता है काल (समय) क्या है तथा उसका स्वरूप क्या है? काल के बारे में सूर्य सिद्धांत में कहा गया है यथोक्तम् -

---

१ • याजुषज्योतिष श्लोक ३

लोकानामन्तकृत् कालः कालोऽन्यः कलनात्मकः |
स द्विधा स्थूलसूक्ष्मत्वान्मूर्तश्चामूर्त उच्यते ||[2]

सूर्यसिद्धांत में यह कहा गया है कि काल दो प्रकार का होता है एक प्राणियों अर्थात सृष्टि का संहार करने वाला तथा दूसरा गणना (कलनात्मक) करने वाला होता है | कलनात्मक काल भी दो प्रकार का होता है एक स्थूल अर्थात व्यवहारिक दूसरा सूक्ष्म संज्ञक अव्यवहारिक कहा जाता है घटी पल आदि मूर्त संज्ञक तथा त्रुटि आदि काल सूक्ष्म (अमूर्त) संज्ञक कहे गये हैं| वेदाङ्ग ज्योतिष में प्राप्त कालमानों से आधुनिक कालमानों में अंतर है फिर भी कई स्थलों पर अनेक समानता है क्योंकि प्राचीन कालमानों का ही विस्तृत रूप आज का आधुनिक कालमान है | वेदाङ्ग ज्योतिष में युग के बारे में काफी चर्चा की गयी है यथोक्तम्-

दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान दशमे युगे |
अपामार्थं यतीनां बृहमा भवति सारथिः ||

अर्थात ममता पुत्र दीर्घतमा दशम युग में वृद्ध होता हुआ परिणाम के प्रति जाने वाले कर्म का ऋतिव्क् रूप सारथि हुआ|

ईर्मान्यव्द्पुषेस वपुश्चक्रं रथस्य ये मथुः |
पर्यन्या नाहुषा युगा महना रजान्सि दीयथः ||2

हे अश्विनों मानव युग में तुम अपने रथ के दूसरे चक्र से भुवन के चारों ओर घूमते रहो |

युगे युगे विद्ध्यं गृणदभ्योग्नेरथिं यशसं धेहि नव्य सीम् |3

हे अग्ने प्रत्येक युग में यज्ञार्थ तुम्हारे उद्देश्य से नयी स्तुति करने वाले हमको द्रव्य और यश दो | ऐतरेय ब्राम्हण में चारों युगों का वर्णन बहुत स्पष्ट रूप से मिलता है इसमें दी हुई युग परिभाषा अत्यंत सारगर्भित है यथोक्तम्-

कलिः शयानो भवति सञ्जिहानस्तु द्वापरः |
उतिष्ठं त्रेता भवति कृतं संपद्ते चरन ||[4]

इस श्लोक में बताया गया है कि मनुष्य के चार प्रकार के कर्म या मानसिक शक्तियाँ ही चार युग है | सोया हुआ अर्थात आलसी और अकर्मण्य मनुष्य कलि (कलियुग) है उठने के लिए प्रयत्नशील द्वापर है उठा हुआ त्रेता है और कर्म में तत्पर कृतयुग (सतयुग) है | वेदाङ्ग ज्योतिष में युग के प्रारम्भ के बारे में कहा गया है यथोक्तम्-

माघ शुक्ल प्रपन्न्स्य पौष कृष्ण समापिनः |
युगस्य पञ्चवर्षस्य कालज्ञानं प्रचक्षते||[5]

सर्वप्रथम युग का आरम्भ माघ शुक्ल प्रतिपदा से होता है तथा पांच वर्ष के बाद पौष कृष्ण अमावस्या को समाप्त होता है|

स्वराक्रमेते सोमार्कौ यदा साकं सवासवौ |
स्यात्तदादियुगं माघस्तपः शुक्लोऽयनं ह्युदक् ||[6]

जब सूर्य व चन्द्रमा दोनों धनिष्ठा तारों के साथ पूर्ण युति कर रहे थे तथा साथ ही ब्रहस्पति भी धनिष्ठा तारों में ही था और यह आकाशीय घटना दृश्य हुई थी तब उस क्षण से एक साथ सबसे पहला युग ,चान्द्र मास माघ शुक्ल पक्ष, उत्तरायण व शिशिर ऋतु एक साथ शुरू हुई थी |
किन्तु आधुनिक काल में युगारंभ का काल भिन्न है सिद्धांत शिरोमणिकार ने कहा है यथोक्तम्-

लङ्कानगरयामुद्द्याच्च भानोस्तस्यैववारे प्रथमं बभूव|
मधोः सितादेर्दिनमास वर्ष युगादिकानामं युगपत् प्रवृत्तिः||[7]

लङ्कापुरी नगरी पर जब सूर्य प्रथम बार उदय हुआ तब चैत्र शुक्ल रविवार से दिन, मास, वर्ष युग तथा कल्प आदि की प्रवृत्ति हुई अर्थात उस समय से सृष्टि का आरम्भ बताया गया है अर्थात आधुनिक मान सतयुग, द्वापर,कलियुग आदि मान वैदिक मान से भिन्न हैं वेदाङ्ग ज्योतिष में पांच वर्ष का युग माना गया है यथोक्तम्-

पञ्च संवत्सरमयं युगाध्यक्षं प्रजापतिम् |
दिनर्त्वयनमासांगं प्रणम्य शिरसाशुचिः ||[8]

वेदाङ्ग ज्योतिष में पांच संवत्सरों (वर्षों) के योग का एक युग माना गया है जैसाकि याजुष ज्योतिष में कहा गया है यथोक्तम् -
युगस्य पञ्चवर्षस्य कालज्ञानं प्रचक्षते |[9]

---

[2] ऋ॰स॰ ५|७३|३
[3] ऋ॰स॰ ६|८|५
[4] ऐ॰ब्रा॰ ३३|१५
[5] याजुष ज्योतिष श्लोक ५
[6] याजुष ज्योतिष श्लोक ६
[7] सिद्धान्त शिरोमणि मध्माधिकार श्लोक १५
[8] याजुष ज्योतिष श्लोक १
[9] याजुष ज्योतिष श्लोक ५

१. संवत्सर
२. परिवत्सर
३. इदावत्सर
४. अनुवत्सर
५. इद्वत्सर

त्रिंशत्यह्नां सषट्षष्टिरब्दः षट् चर्तवोऽयने |
मासा द्वादश सौर्याः स्युरेतत् पंचगुणं युगम् ||[10]

वेदाङ्ग ज्योतिष में पांच वर्ष का एक युग माना गया है और बताया गया है कि एक युग में १८३० दिन होते है और ६२ चान्द्र मास होते हैं यदि हम १८३० को ६२ से भाग दें तो हमें वेदाङ्ग ज्योतिष के अनुसार एक चान्द्रमास में २९.५१६ दिन होते हैं यह संख्या वास्तविकता से छोटी है जबकि आधुनिक मान में एक मास २९ दिन ३१ घटी ५०पल का होता है |युग का आरम्भ उत्तरायण में माघ मास के धनिष्ठा नक्षत्र से होता था इसमें ६० सौर मास ६२ चान्द्र मास २ अधिमास ६७ नाक्षत्रमास १८३० सावन दिन १८६० तिथियाँ ३० क्षय तिथि १८०९ नक्षत्र होते हैं| सूर्य उत्तरायण और दक्षिणायन के बारे में याजुष ज्योतिष में उल्लिखित है -

प्रपद्येते श्रविष्ठादौ सूर्याचन्द्रमसावुदक् |
सार्पार्धे दक्षिणार्कस्तु माघ श्रावणयोः सदा ||[11]

अर्थात् उत्तरायण के आरम्भ में सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में रहता था और दक्षिणायन के आरम्भ में आश्लेषा के मध्य में रहता था उत्तरायण का आरम्भ माघ मास के शुक्ल पक्ष से तथा दक्षिणायन का आरम्भ श्रावण मास के शुक्ल पक्ष से किन्तु वर्तमान समय में एक वर्ष दो भागों में बांटा गया है उत्तरायण तथा दक्षिणायण, उत्तरायण का आरम्भ उत्तराषाढा नक्षत्र पौष शुक्ल पक्ष में होता है और दक्षिणायन पुनर्वषु नक्षत्र से प्रारम्भ से होता है, वर्तमान समय में सूर्य का उत्तरायण और दक्षिणायन राशि के अनुसार प्रचलित है मकरादि से मिथुनान्त तक सूर्य कि गति उत्तरायण रहती है तथा कर्कादि से धनु अन्त तक सूर्य कि गति दक्षिणायन रहती है .

सभी गणित सिद्धांतों के तुल्य वेदाङ्ग ज्योतिष भी सौर सायन वर्ष को ही ग्रहण करता है किन्तु वेदाङ्ग ज्योतिष में ३६६ दिनों का एक वर्ष कहा गया है जबकि आधुनिक मान में वर्ष में लगभग सवा तीन सौ पैंसठ दिन होते है

प्रत्येक वर्ष में ------३६० सौर दिन
" " ------ ३६६ सावन दिन
" " ------ ३७२ तिथियाँ
" " ------ ३६७ नाक्षत्र दिन होते है

प्रत्येक चान्द्र मास में दो पर्व (अर्थात अमावस्या और पूर्णिमा) होते हैं मास के मध्य में पूर्णिमा व अंत में अमावस्या होती है आधुनिक युगीयमान में मास का प्रारम्भ कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर मास के मध्य में अमावस्या एवम अंत शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से होता है इस तरह एक युग में २४ पर्व होते हैं एवम अधिमासों के चार पर्व मिलाकर कुल एक युग में १२४ पर्व होते है वेदाङ्ग ज्योतिष में अधिमास शेष को ऋतु शेष कहा गया है |

आधुनिक काल में युगीयमान को विस्तृत किया गया है शायद बाद के ऋषि विद्वानों को वैदिक युगीयमानों में कुछ कमी नजर आई हुई होगी अतः उन्होंने इसको और अधिक विस्तृत सैद्धान्तिक तथा हर प्रकार से उपयोग प्रद बनाया जैसाकि सूर्यसिधान्त में कहा गया है यथोक्तम्-

तद्द्वादश सहस्त्राणि चतुर्युग मुदाहृतम्|
सूर्याब्दसङ्ख्यया द्वित्रिसागरैरयुताहतैः||
सन्ध्यासन्ध्यांश सहितं विज्ञेयं तच्चतुर्युगम् |
कृतादीनां व्यवस्थेयं धर्मपादव्यवस्थया||
युगस्य दशमो भागश्चतुसित्र द्वेकसंगुणः|
क्रमात् कृतयुगादीनां षष्ठांशः सन्ध्ययोः स्वकः || [12]

बारह हजार दिव्य वर्षो का एक चतुर्युग होता है जिसकी संख्या सौर वर्षों में तैंतालीस लाख बीस हजार (४३२००००) होती है इसमें सन्ध्या और संध्यांशो के भी वर्ष मिले हुए हैं |एक चतुर्युग में सतयुग,त्रेता,द्वापर, और कलियुग,चार युग होते हैं चतुर्युग के दसवें भाग का चार गुना सतयुग,तीन गुना त्रेता,दोगुना द्वापर एक गुना कलियुग होता है प्रत्येक युग के छठे भाग के समान उसकी दोनों सन्ध्यायें होती हैं

युगानां सप्ततिः सैका मन्वन्तरमिहोच्यते |
कृताब्दसङ्ख्यस्तस्यान्ते सन्धिः प्रोक्तो जलप्लवः||
ससन्धयस्ते मनवः कल्पे ज्ञेयाश्चतुर्दश |
कृतप्रमाणःकल्पादौ सन्धिः पञ्चदशः स्मृतः||[13]

७१ महायुगों का एक मन्वन्तर होता है जिसके अंत में सतयुग के समान सन्ध्या होती है इसी सन्ध्या में जल प्लव होता है सन्धि सहित १४ मन्वन्तरों का एक कल्प होता है जिसके आदि में भी सतयुग के समान एक सन्ध्या होती है इसलिए एक कल्प में १४ मन्वन्तर और १५ सतयुग के समान सन्ध्या

[10] याजुष ज्योतिष श्लोक २८
[11] याजुष ज्योतिष श्लोक ७
[12] सूर्य सिद्धान्त ,मध्यमाधिकार श्लोक १५-१७
[13] "सूर्य सिद्धान्त, मध्माधिकार श्लोक १८-१९

हुई चतुर्युग के प्रत्येक युग में दो संध्यायें मानी गयीं हैं परन्तु मन्वन्तर के केवल अंत में एक सन्ध्या मानी गयी है जिसका मान सतयुग के समान होता है

कलियुग - **४३२०००**

द्वापरयुग - ८६४०००

त्रेतायुग - **१२९६०००**

सतयुग - १७२८०००

महायुग - ४३२००००

71 महायुग का एक मन्वन्तर (४३२०००० ×७१ =३०६७२००००) तीस करोड़ सरसठलाख बीस हजार वर्ष एक मन्वन्तर| एक हजार महायुग का एक कल्प (१००० ×४३२ ०००० =४३२०००००००)चार अरब बीस करोड़ वर्ष का एक कल्प | एक कल्प ब्रह्मा का एक दिन जिसमे रात्रि नही शामिल होती है अत:दो (२) कल्पों को मिलाकर ब्रह्मा का एक अहोरात्र (रात, दिन) होता है अर्थात -

२ कल्प = ब्रह्मा का एक अहोरात्र

३६० ×२ = ७२० कल्प ब्रह्मा का एक वर्ष

७२० ×१०० =७२००० कल्प ब्रह्मा जी की आयु कही गयी है जिसको महाकल्प कहते हैं | अतएव वेदाङ्ग काल से युग प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव हुआ जो क्रमश: परिवर्धित एवं विस्तृत होता गया और आज हम उस युगीय मान को परिपूर्ण सैद्धान्तिक कसौटी पर खरा और उपयोगी पाते हैं |